http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

*कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका,* (2026) वर्ष 6, अंक 7, 50-52

Article ID:623

# फूलों की खेती और लैंडस्केपिंग: हरित सौंदर्य, रोजगार और सतत विकास की नई दिशा

**सुधीर कुमार पाठक***

कृषि समन्वयक (बक्सर)
कृषि विभाग, बिहार सरकार
सैम हिगिनबॉटम इंस्टीट्यूट ऑफ़ एग्रीकल्चर टेक्नोलॉजी एंड साइंसेज

*अनुरूपी लेखक
**सुधीर कुमार पाठक***

फूल केवल सौंदर्य के प्रतीक नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, धर्म, उत्सव और भावनाओं के केंद्र में हैं। मंदिरों की माला से लेकर विवाह मंडप की सजावट, गुलदस्ते से लेकर इत्र-निर्माण तक — पुष्पों की माँग हर मौसम में बनी रहती है। हाल के वर्षों में शहरीकरण, बढ़ती आय, बदलती जीवनशैली और अंतरराष्ट्रीय बाज़ार के विस्तार ने फूलों की खेती को एक "उदयीमान उद्योग" (Sunrise Industry) का दर्जा दिलाया है। इसके साथ ही लैंडस्केपिंग — यानी उद्यान, पार्क, सड़क-किनारे हरियाली और भवन-परिसर की योजनाबद्ध सजावट — भी एक बड़े व्यावसायिक क्षेत्र के रूप में स्थापित हो चुकी है।

भारत सरकार ने पुष्प क्षेत्र को 100% निर्यातोन्मुख उद्योग का दर्जा दिया है और इसे कृषि विविधीकरण का महत्वपूर्ण हिस्सा माना है। छोटे और सीमांत किसानों के लिए यह पारंपरिक अनाज खेती की तुलना में 7 से 10 गुना अधिक लाभदायक साबित हो रही है।

## 2. भारत में फूलों की खेती की वर्तमान स्थिति

राष्ट्रीय बागवानी डाटाबेस के अनुसार वर्ष 2023-24 में भारत में लगभग 2.85–3.17 लाख हेक्टेयर क्षेत्र फूल-खेती के अंतर्गत था, जिससे लगभग 26.58 लाख टन खुले फूल तथा 8.76 लाख टन कट-फ्लॉवर का उत्पादन हुआ। वर्ष 2025-26 में यह क्षेत्रफल ऐतिहासिक रूप से बढ़कर लगभग 4 लाख हेक्टेयर तक पहुँचने की सूचना है।

उत्पादन में तमिलनाडु (लगभग 21%), कर्नाटक (16%), मध्य प्रदेश (14%) और पश्चिम बंगाल (12%) अग्रणी राज्य हैं। परंपरागत रूप से गेंदा, गुलाब, चमेली, रजनीगंधा, चंद्रमल्लिका, कमल तथा गुड़हल की खेती होती है, जबकि संरक्षित खेती (पॉलीहाउस/ग्रीनहाउस) में गुलाब, जरबेरा, लिली, कार्नेशन और ऑर्किड जैसे कट-फ्लॉवर उगाए जा रहे हैं।

निर्यात के मोर्चे पर वर्ष 2024-25 में भारत ने लगभग 21,024 मीट्रिक टन पुष्प उत्पादों का निर्यात कर लगभग ₹749 करोड़ (US$ 88.58 मिलियन) की आय अर्जित की। मुख्य आयातक देश अमेरिका, नीदरलैंड्स, संयुक्त अरब अमीरात, यूके, जर्मनी और मलेशिया हैं।

## 3. लैंडस्केपिंग: शहरी हरियाली का नया आयाम

लैंडस्केपिंग का अर्थ केवल बाग-बगीचा लगाना नहीं है, बल्कि यह एक कला और विज्ञान है — जिसमें भूमि, जल, पौधों, पत्थरों और डिज़ाइन के तत्वों को इस प्रकार संयोजित किया जाता है कि पर्यावरण, सौंदर्य और उपयोगिता तीनों बढ़ें। स्मार्ट सिटी मिशन, हरित भवन (ग्रीन बिल्डिंग), आईटी पार्क, फार्महाउस, होटलों तथा आवासीय परिसरों में लैंडस्केप-डिज़ाइनरों की माँग तेज़ी से बढ़ रही है।

बाज़ार रिपोर्टों के अनुसार, भारत का लैंडस्केपिंग सेवा बाज़ार वर्ष 2025 में लगभग US$ 5.98 अरब आंका गया है, जो 2031 तक लगभग US$ 8.89 अरब तक पहुँचने का अनुमान है — यानी 6.8% CAGR की दर से वृद्धि। यह क्षेत्र वास्तुविद, कृषि-स्नातक, बागवानी विशेषज्ञ, नर्सरी संचालक और श्रमिकों को व्यापक रोजगार प्रदान कर रहा है।

**4. रोजगार और आर्थिक अवसर**

पुष्प खेती और लैंडस्केपिंग श्रम-प्रधान गतिविधियाँ हैं, जो निम्न स्तर से लेकर उच्च-कौशल तक अनेक प्रकार के रोजगार सृजित करती हैं—

- **कृषि स्तर पर:** नर्सरी उत्पादन, बीज व पौध तैयार करना, कटाई, पैकिंग, ग्रेडिंग।
- **तकनीकी स्तर पर:** पॉलीहाउस/ग्रीनहाउस संचालन, टिश्यू-कल्चर लैब, पादप-रोग निदान।
- **व्यावसायिक स्तर पर:** फ्लोरिस्ट शॉप, कट-फ्लॉवर व्यापार, इवेंट डेकोरेशन, ई-कॉमर्स पुष्प-वितरण।
- **रचनात्मक स्तर पर:** लैंडस्केप डिज़ाइनर, आर्किटेक्ट, अर्बन प्लानर, गार्डन कंसल्टेंट।
- **मूल्य-संवर्धन में:** सुगंधित तेल, इत्र, गुलाब जल, हर्बल कॉस्मेटिक, सूखे फूलों की कलाकृति (dry flower crafts)।

विशेष रूप से यह क्षेत्र महिलाओं और ग्रामीण युवाओं के लिए स्वरोजगार का सशक्त माध्यम है। कई राज्यों में महिला स्वयं-सहायता समूह गेंदा, गुलाब और रजनीगंधा की खेती व माला-निर्माण से आर्थिक रूप से सशक्त हो रहे हैं। छोटे और सीमांत किसानों, जो कुल जोतों का लगभग 96% हैं, के लिए यह कम भूमि पर अधिक आय का श्रेष्ठ विकल्प है।

**5. पर्यावरणीय लाभ और सतत विकास**

फूलों की खेती और लैंडस्केपिंग सतत विकास के अनेक लक्ष्यों (SDGs) से गहराई से जुड़े हैं—

- **वायु शुद्धिकरण:** पौधे $CO_2$ अवशोषित कर ऑक्सीजन प्रदान करते हैं तथा वायु में धूल-कण घटाते हैं।
- **जैव-विविधता संरक्षण:** विविध पुष्प प्रजातियाँ मधुमक्खी, तितली और परागकों के लिए आवास प्रदान करती हैं।
- **मृदा-संरक्षण:** सदाबहार आवरण मृदा-अपरदन रोकता है और नमी बनाए रखता है।
- **जल-संरक्षण:** बूँद-सिंचाई (drip) और फर्टिगेशन के साथ कम पानी में अधिक उत्पादन संभव है।
- **शहरी ताप-द्वीप प्रभाव में कमी:** हरित उद्यान और वर्टिकल गार्डन शहरी तापमान को 2–4°C तक घटा सकते हैं।
- **मानसिक स्वास्थ्य:** हरियाली से तनाव, चिंता और अवसाद कम होते हैं — "ग्रीन थेरेपी" आज मान्य विज्ञान है।

**6. आधुनिक तकनीक और नवाचार**

आज पुष्प खेती केवल पारंपरिक तरीकों तक सीमित नहीं है। **संरक्षित खेती (Protected Cultivation)** के अंतर्गत पॉलीहाउस में गुलाब जैसी फसलें प्रति एकड़ **4.75 से 8.00 लाख डंठल (stems)** प्रति वर्ष तक दे रही हैं, जबकि खुले खेत में यह मात्रा 3.75–5.00 लाख तक सीमित रहती है।

अन्य प्रमुख तकनीकें हैं—

- **टिश्यू-कल्चर (ऊतक-संवर्धन):** रोगमुक्त, समान गुणवत्ता वाले पौधों का बड़े पैमाने पर उत्पादन।
- **हाइड्रोपोनिक्स व एरोपोनिक्स:** मृदा-रहित खेती, विशेषकर शहरी छत-उद्यानों में।
- **IoT व सेंसर आधारित नियंत्रण:** तापमान, आर्द्रता, EC/pH की स्वचालित निगरानी।
- **CRISPR व आणविक प्रजनन:** नए रंग, लंबी शेल्फ-लाइफ तथा रोग-प्रतिरोधी किस्मों का विकास।
- **कोल्ड-चेन और शीत-भंडारण:** कट-फ्लॉवर के निर्यात के लिए अनिवार्य।

**7. सरकारी योजनाएँ और सहायता**

पुष्प खेती के प्रोत्साहन हेतु केंद्र एवं राज्य सरकारें अनेक योजनाएँ संचालित कर रही हैं—

- **MIDH** — मिशन फॉर इंटीग्रेटेड डेवलपमेंट ऑफ हॉर्टिकल्चर के अंतर्गत पॉलीहाउस, नर्सरी व सिंचाई पर 50% तक अनुदान।

- **राष्ट्रीय पुष्प मिशन (NFM)** — 133 जिलों में 250+ क्लस्टरों के माध्यम से क्षेत्र-विस्तार।
- **APEDA** — निर्यात-आधारित इकाइयों को वित्तीय व तकनीकी सहायता।
- **फ्लोरीकल्चर डेवलपमेंट स्कीम (FCDS)** — पूर्वोत्तर व पर्वतीय राज्यों में विशेष प्रोत्साहन।
- **NABARD ऋण सुविधा** — किसानों को कम ब्याज पर पूंजी।

## 8. चुनौतियाँ

हालाँकि क्षेत्र में अपार संभावनाएँ हैं, कुछ चुनौतियाँ अब भी बनी हुई हैं—

- असंगठित विपणन तंत्र और मूल्य की अस्थिरता।
- कोल्ड-चेन व लॉजिस्टिक्स की कमी जिससे 25–30% तक पुष्प खराब हो जाते हैं।
- उच्च प्रारंभिक निवेश (पॉलीहाउस निर्माण)।
- जलवायु परिवर्तन — असामयिक वर्षा, तापमान वृद्धि व कीट-प्रकोप।
- प्रशिक्षित कुशल श्रमिक तथा लैंडस्केप-डिज़ाइनरों की कमी।

## 9. आगे की राह

फूलों की खेती और लैंडस्केपिंग को "कृषि + उद्योग + पर्यटन + पर्यावरण" के समन्वित मॉडल के रूप में विकसित करने की आवश्यकता है। किसान उत्पादक संगठनों (FPOs) को मजबूत करना, ई-मंडी व ई-नाम से जोड़ना, ब्रांडिंग व GI-टैगिंग (जैसे मैसूर मल्लिगे, कोयंबतूर गुलाब) को बढ़ावा देना और "फ्लोरिकल्चर टूरिज्म" (जैसे सिक्किम व दार्जिलिंग के ऑर्किड शो, राजस्थान के गुलाब उत्सव) को विकसित करना समय की माँग है।

शहरी क्षेत्रों में छत-उद्यान (Terrace Gardening), वर्टिकल गार्डन और मियावाकी लघु-वन जैसी अवधारणाओं को अपनाकर हम प्रदूषण घटाने और शहरी नागरिकों के स्वास्थ्य को सुधारने में योगदान दे सकते हैं। कृषि विश्वविद्यालयों में लैंडस्केप आर्किटेक्चर और फ्लोरिकल्चर उद्यमिता के पाठ्यक्रम युवाओं को स्वरोजगार की दिशा प्रदान कर सकते हैं।

## निष्कर्ष

फूलों की खेती और लैंडस्केपिंग केवल सौंदर्य और शोभा तक सीमित नहीं हैं — ये आज आर्थिक समृद्धि, सामाजिक कल्याण और पारिस्थितिक संतुलन के एक शक्तिशाली माध्यम बन चुके हैं। उच्च मूल्य, अल्प-अवधि की फसल, महिला-सशक्तीकरण, निर्यात-क्षमता और शहरी हरियाली — यह क्षेत्र भारत को "हरित एवं सुगंधित अर्थव्यवस्था" की ओर ले जा सकता है। यदि तकनीकी नवाचार, सरकारी नीतियाँ और किसानों की उद्यमिता तीनों मिलकर आगे बढ़ें, तो **"**हर खेत में फूल, हर शहर में हरियाली, हर हाथ को **रोजगार"** — यह स्वप्न शीघ्र ही साकार होगा। सतत विकास की दिशा में यह क्षेत्र निश्चित रूप से एक हरित क्रांति की नई परिभाषा गढ़ रहा है।